

ॐ नमः धीनरेश्वराय ।

नान्दो गीत ॥ चो ॥

प्रथमहि सुमरये गुह गणेश ।
वेद्य श्रवण वर हरषु कलेश ॥
कर तिरस्कर डमरु मणि हार ।
प्रेम धरिअ शिव शरधङ्ग दार ॥
नदि भृङ्गि सङ्गे निरित विहार ।
ओडि इसर, सुंदर बाष छाल ॥
चौद तिलक अथा निरमल गङ्ग ।
विभुवन ठाकुर भुपल भुजङ्ग ॥
तोहहि सोहाधोन मोर मने भाव ।
जगत प्रकाश भूप कौतुके गाव ॥

(श्लोकः)

तनुताम्रदीप्तिजरास्रपल्लवो, धृतवालभालविधुपुष्पमालयकः ।
हरभौलिमङ्गलधटो घटेत वः कुशलाय गाङ्गजलपूरपूरितः ॥

(सूच-प्रवेश)

(भवहि भैरव, मा)

राग नाट ॥ जति ॥

जय जय जननि करह कल्याण ।
सुर नर का तोहरे पय ध्यान ॥
बहुविध शस्त्रं अस्त्र धर माता ।
तोहहि एक श्रवण वर दाता ॥

प्रथमहि सुनधार परवेश ।
 दैअधु अमय दुर होध कलेश ॥
 जगत प्रकाश देवि पद सारे ।
 नाट रागे गावए इ जति ताले ॥ २॥

(पुष्पाञ्जलि श्लोकः)

चञ्चद्भू भारखर्वीभवदधिकफणव्यप्रदध्वीकरेश,
 वासास्तव्यस्तपङ्कुरहभयनकरव्यस्त 'शस्त्राक्षसूय' ।
 स्फूर्जद्वेतालताल धिकटगरावुतं चण्डिकाचण्डहार्य,
 पायाङ्कृतानपायात्त्रिपुरपुरभिदस्ताण्डवाडम्बरं वः ॥

सूत्र०—हे प्रिये ! एतय आठ ।

(नटी तिपवदुहाय)

नाथ ! मोर नमस्कार, कसोने कारणे धोलबला ।

सूत्र०—हे प्रिये ! राजाक आज्ञा भयल, भगवतीक महोत्सव प्रभावती-
 हरण नाम नाटक नाचय आदेश भेलछ ।

नटी—हम नहि जानवी छाह कउन राजाक आज्ञा ।

सूत्र०—प्रिये ! अवधारण कर । राजाक वर्णना सुनु ।

(सुनोकि राज-वर्णना)

(जयाडा मा)

राम कौशिक ॥ जो ॥

रविकुल कमल विकास दिनेश ।

उगल जगत परगास नरेश ॥

दुरजन तिमिर दुरहु दुर गेल ।

धरम करम अति उपचित भेल ॥

१. पाण्डुलिपि मे 'मुस्त' अछि ।

हरपित लोक लोक नहि काहु ।

वरिसय यन जनि घन वरिसाहु ॥

केशो बोल राम, केशो बोल काम ।

काहुक मन पुहवी हिमधाम ॥

चंद्रावलि पहु पदुमावलिदमि कस्त ।

सनु जस पुरल सकल दिगस्त ॥

भनयि वंशमणि मने गुणि सार ।

करि बलि राय कर्ज अवतार ॥

एहन राजा श्री श्री जगत्प्रकाश मल्ल ।

नटी—हे प्राणनाथ ! हमे जानल, र वंशावतार श्री श्री जगद्भ्योति-
 मल्लक दूसर चर्मावतार, श्री श्री नरेशमल्ल देवक हृदयानन्दन,
 राजाधिराज श्री श्री जस जगत्प्रकाश मल्ल देव, जन्हिके
 राजधानि शतहु मुखे कह्य नहि पारि, तवादि किछु मोय कहै
 छव, अवधान कर ।

सूत्र०—प्रिये ! कहु ।

(नदयुक्त देश धनना)

(सपनेमे मा)

उत्तम देश भगतपुर नाम ।

देखितहु सबका भेल अभिराम ॥

आदि जननी ताहा करधि निवास ।

सबहु लोके कयल तन्हिके यात ॥

लोक अछय एतय निक जाति ।

इन्द्रपुरि सजे इ देश भल भाति ॥

जगत प्रकाश नृपति एह भान ।

चण्डि चरण दादि आन नहि जान ॥

१. छाहि ।

हे नाथ ! एहन राजाक राजधानि ।

सूत्र०—प्रिये ! प्रभावतीहरण नाटक अभिनय कर ।

मटी—प्रभु ! भल कहल । हे नाथ ! इहाय प्रद्युम्न हम प्रभावती,
काछय चर ॥

(सूत्र निस्सार)

(उद्योतुम मा)

महलाल ॥ लज्जति ॥

हमे होयव कन्दर्पलोहे होउ प्रभावती
सेहे दुहु का छेकल साज ॥ ४० ॥
अनेक गुनि मिलि रह धाम ।
इ सबक मन कह अभिराम ॥

(प्रथम कोणे)

सूत्र०—हे प्रिये ! प्रद्युम्न काछय, जाय चर ।

मटी—नाथ ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

मटी—हे नाथ ! इहाय कृष्णक संग प्रवेश कर, हमे वज्रनाभ संगे
प्रवेश करव ।

सूत्र०—प्रिये ! प्रति उत्तम ॥ ४० ॥

(कृष्णादि प्रवेश)

(जासि मा)

(राग मल्लारी ॥ अस्तारा ॥

पीत वसन वर चारि करे ।
शंख चक्र गदा पटुम धरे ॥
सुत दार सहित कपल परवेश ।
देल अभय दुर कपल कलेश ॥

जगत प्रकाश नृपति एहो गाव ।

मोश मन विष्णु चरण पए भाव ॥

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा, गद, शारण, प्रद्युम्न, शम्भ ! हमर
कथा सुनु ।

सर्वे—जगदीश्वर ! आज्ञा कर ।

कृष्ण—(श्लोक)

आतोऽहंवमुदेवधुनुरमरप्रोत्थं धरिनीतले,
दृष्यद्दानवकोटिसंगरकलापाण्डित्यवेतण्डिकः ।
सोऽहं सम्प्रविशामि रङ्गसदनं मङ्गल्यकारी सतामु-
त्साहं जनयन्तपूर्वैरचनाचिरैश्चरित्रैरपि ॥

हे लोके ! एहन कृष्ण हमे ।

सर्वे—ईश्वर ! सत्य ।

रुक्मिणी—हे नाथ ! हमर गोचर सुनु ।

कृष्ण—प्रिये ! कह ।

(श्लोक)

स्वमाङ्गी रुक्मिणी रुक्मिभगिनी भागवशालिनी ।
रङ्गमण्डपमाविश्य हरामि हृदयं हरेः ॥

हे नाथ ! एहन रुक्मिणी हमे ।

कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।

सत्यभामा—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर करे छव ।

कृष्ण—प्रिये ! कह ।

(श्लोक)

अभग्नसत्या भुवि सत्यभामा रामावलीनामुपरिस्थिताहम् ।
संप्राप्य भर्तारमुपेन्द्रमिन्द्रवपिहं रङ्गगृहं विशामि ॥

हे प्रभु ! एहन सखभामा हमे ।
 कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।
 गव—हे प्रभु ! हमहु किछु कहव ।
 कृष्ण—गद ! कहु ॥

(श्लोक)

गदो गदाधरस्याहं मनुजो दनुजान्तकः ॥
 सम्बिशामि मुदा रङ्गमनङ्गसुभसाकृतिः ॥

हे ईश्वर ! एहन गद हमे ।

कृष्ण—गद सत्य ।
 सारण—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर कहै छव ।
 कृष्ण—सारण ! कहु ।

(श्लोक)

जगत्त्रितयनाथस्य कृष्णस्याहमिहानुगः ।
 प्रविशामि दिशामीशानधरीकृत्य सारणः ॥

हे ईश्वर ! एहन सारण हमे ।

कृष्ण—सारण ! सत्य ।
 प्रद्युम्न—हे तात ! हमरो बिनति मुनु ।
 कृष्ण—वत्स ! कहु ।

(श्लोक)

यज्जकोऽहं शम्बरस्य दर्पहा रतिवत्सलः ।
 विशामि रङ्गभयनं देवकोसलुनन्दनः ॥

हे तात ! एहन प्रद्युम्न हमे ।

कृष्ण—पुन ! सत्य ।
 शम्बर—हे प्रभु ! हमर बिनति मुनु ।
 कृष्ण—शम्बर ! कहु ।

(श्लोक)

यदुवंशावतारस्य विष्णोर्हृदयनन्दनः ।
 निविशेऽहं मुरा रङ्गे शाम्बो जाम्बवतीमुतः ॥

हे ईश्वर ! एहन शाम्बर हमे ।

कृष्ण—ई निषधय ।
 कृष्ण—हे लोके ! खनेक बिश्राम कह ।
 सखे—ईश्वर ! जे आशा ।
 कृष्ण—हे लोके ! उपवन जायव चह ।
 सखे—ईश्वर ! अवश्य ।

(कृष्णादि निस्तार)

(हथ न कर मा)

कोदाव ॥ कामोद ॥ चो ॥

आनन्द भेल हमरे, जायव कदम तले । देख उपवने ॥ ध्रु ॥

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! केलि कानन चलु ।

सखे—ईश्वर ! जे आशा ।

(द्वितीय कोणे)

कृष्ण—हे गद, सारण, प्रद्युम्न, शाम्बर ! राखक चिन्ता कह ।
 भद्रादि—जे आशा ।

(गव प्रद्युम्न शाम्बर त्रिपुत विहाय)

शक्तिमणी तथा सत्य भामा—हे प्रभु ! त्वराय उपवन ब्रिज कह ।

कृष्ण, उत्तम, चलु ॥ लुर ॥

(कृष्ण शक्तिमणी, सत्यभामा दयलनदुहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन दर्शन उत्कंठा हायि छि ।

रविमणी सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।
(द्वितीय कोणे)

रविमणी सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।
(द्वितीय कोणे)

रविमणी सत्यभामा—हे प्रभु ! प्रधान कर ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन रमणीय ।

रविमणी सत्यभामा—अवयव ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन कहने रमणीय ।

रविमणी सत्यभामा—प्रतिरमणीय सोप ।

कृष्ण—हे प्रिये ! विश्राम कर ।

रविमणी सत्यभामा—ताय । भल !

कृष्ण—प्रिये ! हमर कहिनी सुनु ।

रविमणी सत्यभामा—हमर ! जे आजा ।

(कृष्णवा शृङ्गार ॥ ज्वाला मा ॥)

का ही, भूपा, पह ॥ प्र ॥

अपह्वर रमणी तुम मुख चंद ।
सेहे देखि मोर उपजल आनन्द ॥
सुन्दरि तोहे कर एक परकार ।
मदन बेआधि सत्रे जे हो संतार ॥
बिहसि करहु हम सत्रे सदभाव ।
अधिक माने इस किछु नहि पाव ॥
जगतप्रकाश भन मानवती ।
माने मारहु जनु तोहे निजपती ॥

हे प्रिये ! हमर मदन ताप दूर कर ।

रविमणी सत्यभामा—हे प्रभु ! हमर किछु गोचर सुनु ।
कृष्ण—प्रिये कहु ॥

(ज्यो मय जनितहु, मा)

मालव ॥ चो ॥

तोहे पहु सुन्दर नयन कमल दल, तोर रूप सदन समाने ।
सुनहु हमर मति आन नहि मोल गति, पिपा आगि अलप परान ॥
हमे नहि सुन्दरि खिन मति नागरि, रति रङ्ग किछु नहि जान ।
मधुर वचन सुनि अमलहु सदन तुम मुदित करहु मधुपान ॥
तोहर अखिन हमे आज सुदिन भेल, दरशन पावल तोर ।
हरल अनेक दुख बिहि मोहि देल मुख, निते श्रेयोव पद खोर ॥
नरेश नृपति सुत प्रकाश मल भूप, ई रस कीतुके भान ।
देख तोका बिनु किछु नहि पाविस, मोर मन एहि पय जान ॥

सुनु पहु रसिया रे ॥ शु ॥

हे नाथ ! हमरा इहा बिनु रति नहि ।

कृष्ण—प्रिये ! एहने ।

कृष्ण—हे प्रिया लोके ! अन्तपुर जात रहु ।

रविमणी सत्यभामा—जे आजा ॥ लु ॥

(इन्द्र, जयन्त, हंस, हंसी प्रवेश)

(भीम अर्जुन मा)

(वसन्त ॥ रूपक ॥)

देवराज सब देवक ठाकुर ।
जे माग जे बल, से देव पूर ॥
सिर मुकुट धरि परवेश देल ।

रङ्ग भूमि देखि आनन्द भेल ॥
जयन्त हंसि संगे भेलहु सुसोभ ।
अमरावतिका उपर कए लोभ ॥
जयत प्रकाश नृपति एही भान ।
काम अरि क पद कए अवधान ॥

इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! हमर बोल सुनु ।
सर्व—देवराज कह ।

(श्लोक)

पुल्लोमजाप्राणपतिर्विलस्य भेत्ता, भवानीपतिभक्तिपुक्तः ।
विशामि रङ्गाङ्गनमस्तजभोदम्भोलिभृत्सर्वगुपर्वराजः ॥

हे लोके ! एहन इन्द्र हमे ।
जयन्त—तात ! एहने ।
जयन्त—हे तात ! हमरो किछु गोचर सुनु ।
इन्द्र—वत्स ! कह ।

(श्लोक)

दुष्टदानवकुलस्य दर्वहा पाकशासनिरहं महाबलः ।
सर्वदेवगणसेवितो मुदा सन्विशामि वररङ्गमन्दिरम् ॥

इन्द्र—वत्स, सत्य ।
हंस—हे देवराज ! हमर किछु गोचर सुनु ।
इन्द्र—पक्षिराज ! कह ।

(श्लोक)

राजहंसकुले जातः पाकशासनसेवकः ।
विशामि मुदितो रङ्ग मरालकुलसेवितः ॥

हे देवराज—एहन आजाकारि सेवक हमे ।
इन्द्र—पक्षिराज ! एहने ।

हंसी—हे देवराज ! हमरो बिनति सुनु ।
इन्द्र—हंसी ! कह ।

(श्लोक)

ग्रहं शुचिमुखी हंसी अमन्ती भुवनावलीः ।
विशामि रङ्गसदनं मदनप्रियकारिणी ॥

हे देवराज ! एहन शुचिमुखी हंसी हमे ।
इन्द्र—हंसी ! सत्य ।
इन्द्र—हे जयन्त हंस, हंसी ! किछु काल विधाम कह ।
सर्व—प्रभु ! जे इच्छा ।
इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! नन्दन बन चलु ।
सर्व—देवराज ! अवश्य ।

(इन्द्र निस्सार)

(चुनिवा मा)

सारङ्गी तोड़ि ॥ चो ॥

चलि जाउ जयन्त वेगे अमरावती ॥ धु ॥
हम सब दुख देल सज्जनाभ असुरे ।
कतने जतने हंसी पथाए कह एकर जीव करत दूरे ।
हे जयन्त ! नन्दन देखय जायव ।
जयन्त—तात ! भल ।

(प्रथम कोणे, द्वितीय कोणे)

इन्द्र—हे हंस, हंसी ! इहास तिनि व्यक्ति, वज्रपुर सब वज्रनाभ गारे
लाइ, प्रभावती प्रद्युम्न मिलाउ, हमर कार्य कर ।
हंस—देवराज ! जे आज्ञा ।

(हंस, हंसी, दवलन विहाय)

जयन्त—हे तात ! हमरा नन्दन बन बिजय कर ।

वज्र—जयन्त ! अलक्ष्य ॥ लु ४ ॥

(परशिव मा)

बलालि ॥ प्र ॥

देल वर पितामहे पाओल हमे ।
तेहि बले जिनल भुवन तिनि हमे ॥
वज्रनाभ नाम दानव भेल ।
आनन्द सकल असुर जन देल ॥
मोर बल सुरमुनिगण हो मलाने ।
के होएत दोसर हमर समाने ॥
कौतुके गावए जगतप्रकाशे ।
गुणि जन मन होय अधिक उलासे ॥

वज्रनाभ—हे प्रेमवती, सुनाभ, सुनीति, प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती
मत्त ! हम किछु कहै छहूँ मुनु ।
सर्व—दैत्यराज ! आज्ञा कर ।

(श्लोक)

सदावलम्ब्यकृतपद्मनाभः सवज्रनाभो हृतवज्रिगर्भः ।
विशाम्यहं वज्रपुरीनिवासो नटालयं अस्तसमस्तदैवः ॥
हे लोके । एतादृश वज्रनाभ हमे ।
सर्व—दैत्यराज ! एहने ।
प्रेमवती—हे नाथ ! हमहु किछ विज्ञप्ति करै छहूँ ।
वज्र—प्रिये ! कहूँ ।

(श्लोक)

दानवेन्द्रपदद्वन्द्वसेवया हृतकिल्बिषा ।
विशामि रङ्ग-सदनं नाम्ना प्रेमवती प्रिया ॥
हे नाथ ! एहन प्रेमवती, इहाक ।

वज्र—प्रिये ! सत्य ।

सुनाभ—हे दानवेन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—सुनाभ ! कहूँ ।

(श्लोक)

समस्तदेववृन्दानां दर्पतंदोहदारकः ।
वज्रनाभानुशो रङ्ग सुनाभः संविशाम्यहम् ॥

हे दैत्यराज ! एतादृश सुनाभ हमे ।

वज्र—सुनाभ ! उचित ।

सुनीति—हे प्रभु ! हमर वचन अवधान कर ।

वज्र—सुनीति ! कहूँ ।

(श्लोक)

सुनीतिर्मन्त्रिराजोऽहं तीर्त्तन्यवकृतभार्गवः ।
नटालयं संविशामि, दृष्टदानवसेवितः ॥

हे प्रभु ! एहन सुनीति मन्त्रिराज हमे ।

वज्र—मन्त्री ! सत्य ।

प्रभावती—हे तात ! हमर विज्ञप्ति सावधान कर ।

वज्र—पुत्रि ! कहूँ ।

(श्लोक)

प्रभावती प्रभावती स्तोत्ररङ्गदायिनी ।
जगत्त्रयेकनागरी विशामि रङ्गमण्डपम् ॥

हे तात ! एहन प्रभावती हमे ।

वज्र—पुत्रि ! एहने ।

चन्द्रावती—हे दैत्यराज ! हम किछु कहै छहूँ ।

वज्र—चन्द्रावति ! कहूँ ।

(श्लोक)

अहं चन्द्रावती नाम्ना मुनाभतनवोत्तमा ।
रङ्गाङ्गनं समाधामि कामिनोमोलिगण्डनम् ॥

हे दैत्यराज ! एहन चन्द्रावती हमे ।

वज्र—चन्द्रावती, सत्य ।

गुणवती—हे दैत्येन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—गुणवती ! कहु ।

(श्लोक)

अहं गुणवती कन्या स्वर्गकन्या गुणोत्करः ।
रङ्गस्थानमुपाधामि कामकेलितरङ्गिणी ॥

हे महाराज ! एहनै गुणवती हमे ।

वज्र—वत्से ! सत्य ।

मत्त—हे महाराज ! हमहु कहव ।

वज्र—मत्त ! कहु ।

(श्लोक)

मत्तो दानधराजस्य वञ्चनाभस्य सेवकः ।
देशकम्पकरो नित्यं नृत्यस्थानमुपाधये ॥

हे प्रभु ! एहन मत्त नाम हमे ।

वज्र—मत्त, सत्य ।

सखी—रानी, हमर गोचर सुनु ।

रानी—सखी कहु ।

(श्लोक)

केशसंस्कारकुञ्चाह्वेशविन्द्यासपेशला ।
विशामि रङ्गसैरंधी, पुरंधीणां रहः सखी ॥

हे रानी ! एहन सैरंधी हमे ।

रानी—सैरंधी ! सत्य ।

वज्र—हे लोके ! मुमुर्त्त विश्राम कर ।

सखी—दैत्यराज ! सध्वंथा ।

वज्र—हे लोके ! सरोवर निकट सभा जायव ।

सखी—महाराज ! अवश्य ।

(वञ्चनाभ विस्तार)

(वयिजि मा)

पहुँइया ॥ मालव द्व ॥

बलह जायव लोके सभा हमरे ।

अनेक बुझ देल हमे सकल अगरे ॥

(प्रथम कोणे)

वज्र—हे लोके ! सभा जायव ।

सखी—दैत्यराज ! अवश्य जायव ।

(द्वितीय कोणे)

प्रभा—हे तात ! हमर प्रणाम, अन्न स्थान जायि छि ।

वज्र—पुत्री ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, दक्षजन विहाय)

मुनाभ—हे दैत्यराज ! त्वरित विजय कर ।

वज्र—मुनाभ ! चलु ॥ सु ५ ॥

(हंस, हंसी, वंत्तारण दुहाय)

(बंधु, बंधु मा)

सारङ्गी ॥ भध्मारि ॥ चो ॥

जाए देखव दैत्यराज समाज ।

१. पाण्डुलिपि मे 'दैराज' पाठ अछि ।

२. पाण्डुलिपि मे 'अर' पाठ अछि ।

श्रवण करव हमे वासवक काज ॥
लहु लहु जाएव मय ॥ ध्रु० ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! हमे वज्रनाभक निकट जायव ।
हंसी—हे नाथ ! इन्द्रक काज कर ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! सरोवर चर ।
हंस—श्रवण चर ।
हंस—हे हंसी ! खनेक विश्राम कर ।
हंसी—नाथ ! श्रवण ।
हंस—हे हंसी ! बड़ अभिराम सरोवर ।
हंसी—नाथ ! बड़ रंगस्थान ।
हंस—हे हंसी ! हमर वचन सुनु ।
हंसी—नाथ ! कहु ।

(देखिमा मा)

काफी, माख्या ॥ चो ॥

देख तोहे एहे सरोवर के शोभा ।
मोर मन भेल दुहु खेलए के शोभा ॥
कमल तल खेल चकैया जोर ।
से देखि सदन मनोरथ मोर ॥
निलमल धनरस ई परिपूर ।
धिरे आव मारसे मुरभि सुशीतले ॥
ए सवे हमे तोर अचिन कय देल ।
नाथ रूप देखि मानओ तेजि गेल ॥

जगत प्रकाश नृपति एही भालय ।
शुचिमुखि हंसि हंस रस राखय ॥
हे नाथ ! हमे इहाक अधीन ।
हंस—हे प्रिये ! बड़ उत्तम स्थान, ई सरोवर, एतय रह ।
हंसी—नाथ ! श्रवण ।

(वज्रनाभावि वचन सुहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर जायव चर ।
सुनाभ—वज्रनाभ ! श्रवण ।
वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर देखि मन उरलास बड़ भेल, एहि धाम
विश्राम कर ।
सर्व—प्रभु ! उत्तम ।

(विश्राम पाय)

वज्रनाभ—हंस ! आश्चर्य न सोय ।
वज्र०—हे हंस हंसी ! इहा तीनहु व्यक्ति अपूर्व रूप, अद्भुत स्थान,
सुन्दर वाजव, कतय सय आयल छि, सुनु ।
हंस—देव्येन्द्र ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति दण्डक)

(कान कुंडल मा)

मोड़ी ॥ प्र० ॥

कतय सो आयल ई सरोवरे,
तोहे हंसि हंस मिलि के ॥ ध्रु० ॥
किए आएलाह तोहे मोर ई राजे ।
कह तोर भेल की काजे ॥ मेभासा ॥

हे हंस ! कशीन काजे एतय आयला हे ।
हंस—हे देव्येन्द्र ! जे आवलाहु से सुनु ।
वज्र०—हंसी ! कहु ॥

(हंसोक्ति दण्डक)

तोर नगर देख्य के अभिलाखे ।
ते अयलहु ई कामे ॥ ध्रु० ॥
देख्य देह तोहे ई बज्रपुर ।
हमारा मन का आसा पूर ॥ मैभास ॥

हे दैत्येन्द्र ! हमरा इहाक नगर देख्य आयलाहु ।

बज्र०—हंसी ! यथेष्ट देखु ॥

बज्र०—हे लोके ! अपुर्व हंस, हंसी, अति सुन्दर तुर, सब देखु ।

सर्वे—दैत्यराज ! अवश्य ॥

(सोद)

सर्वे—हे दैत्यराज ! उत्तम कहै छि, अति सुन्दर ।

बज्र०—हे प्रेमवती ! अन्त पुर चलु ।

प्रेमवती—नाथ ! जे आजा ।

(सखनाम शास, दवलन विहाय)

(प्रथम कोने)

बज्र०—हे प्रेमवती ! त्वराम चलु ।

प्रेम०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोने)

प्रेम०—हे दैत्यराज ! शीघ्र विजय कलु ।

बज्र०—प्रिये ! चलु ।

हंस—हे हंसि ! हमरा सरोवरे रहु ।

हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(हंस, हंसी, परि विहाय ॥ सु ॥)

(कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, परिहु हाय)

कृष्ण—हे प्रिये ! खनेक आराम कलु ।

रुक्मिणी, सत्यभामा—नाथ ! अवश्य ।

इति प्रथमाङ्कः ।

॥ अथ द्वितीय दिवसे ॥

(कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, अलंकारन बुंहाय)

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा ! खनेक विश्राम कर ।

रुक्मिणी—सत्यभामा ! अवश्य ।

रुक्मिणी सत्यभामा—नाथ ! आशा कर ।

(राम तुमि मा)

विभास ॥ प्र ॥

प्रभावह सुन्दरि उगल रवी ॥ ध्रु० ॥

चक्क चक्क का मन, दूर गेल शोक ॥

भेल प्रभात न आयल मुत लोक ॥

कृष्ण—हे प्रिये ! प्रातःकाल भेल, प्रयुम्न, गद, शाम्ब लोक नहि

आयल कि ?

रुक्मिणी सत्यभामा—अयलप्राय ॥

(प्रथम कोने)

प्रयुम्न—हे गद, सारण, शाम्ब ! पिताक चरख देखव ।

सर्वे—हमरहु एहे मन ॥

(द्वितीय कोने)

सर्वे—हे प्रयुम्न ! त्वराय चलु ।

प्रयु—गद, शाम्ब ! चलु ।

सर्वे—ईश्वर ! हमर प्रणाम ।

कृष्ण—हे लोके ! बेसू ।

प्रयु०—अवश्य ।

१. पाण्डुलिपि मे 'उज्ज्वल' पाठ अछि ।

(कृष्णादि अवलन विहाय)

हे लोके ! सभा स्थान चलु ।

सर्व—जे आजा ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! सत्वर चलु ।

सर्व—नाथ ! विजय कलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्व—हे ईश्वर ! विजय कलु ।

कृष्ण—लोके ! चलु ॥ सु० ७ ॥

(हंस, हंसी, परि वुंहाय)

हंस—हे हंसी ! उपवन देखि रहु ।

हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, पैसारण वुंहाय)

(कमल वसन मा)

गौड़ी :। चो ॥

बलह सखि जाउ दुहु उपवने ॥ घ० ॥

तोहे हमे देखव, बनक शोभा,

हमरा मन लागल ओतए ।

कमल विपिन देखए के लोभा,

ई सम्बुज पर भमर मए ॥

हे सखी ! सरोवर देखव, चलु ।

सखी—हविमणी ! चलु ।

(तृतीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! हमरजे मन सोहास भय ।

प्रभा०—हे सखी ! खनेक विश्वास कह ।

सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(सरोवर हंस सोप)

प्रभा०—हे सखी ! कहने सुन्दर हंसी ।

सखी—चलु संभाषण पुलु ।

प्रभा—सखी ! अवश्य ।

(निकट सवने)

प्रभा०—हे हंसी ! इहाअ अपूर्व देखे क्षिप, के थिक ?

हंसी—हे कन्या ! हमे हंसी स्वर्गलोक सजे आयल छि, इहाअ के थोक,
ककर पुत्री ?

प्रभा—हे हंसी ! हमे यजनाभ देवक पुत्री प्रभावती ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर वचन सुनु ।

प्रभा—भल, कहू ।

(हंसुवित वक्त्रक)

(कागहा सोरो, मा)

गौड़ी ॥ सारङ्ग ॥ प्र ॥

सुनु रामा किछु कहिनी मोर,

न होम पति विनु रति ॥ पु० ॥

जुवति वयस पिया नहि भेज सोर ॥

हे प्रभावती ! ई सोहर रूप, वयस, स्वामि विनु निरखैक ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

हमरजे सुनु एक धिनति,

मोम वाला नहि जानो कथा ॥ पु० ॥

हम राखल एहि पुर ए जुगुति,

कर परकार सोहे दूति ।

हे हंसी ! बापे हन अन्तःपुर अवरुद्धि कय लाखल^१ धिमहु, तोहे
उपाय कर ।

हंसी—प्रभावती ! सुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहू ।

बेखल कृष्ण सुत करहु विचार ।

ओकर होम तोहे बार ॥

हे प्रभावती ! कृष्णक पुत्र, प्रबुद्ध पुत्र रत्न, जे तोहर उचित
स्वागो ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

तात्क बेरि सौं ई नहि उचीत ।

तोहहि बिचार कर नीत ॥

हे हंसी ! हमरा बाप सौं कृष्ण सहज बेर, तस्विका पुत्र सजे
प्रीति उचित नहि ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर बचन सुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहू ।

मने अनु शंका करहु तोहे आज्ञे ।

एहे होम उत्तम काजे ॥

हे प्रभावती ! कृष्ण बेलोबपनाय, हुनका पुत्र सजे प्रीति, कसोतो
शंका नहि, ई कार्य शीघ्र कर ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

तोहर कथा सुनि त होम नाश,

मोए कयल तोहेरे आश ॥

हे हंसी ! इहाक कथा सुनि, बिरह ज्वाला भेल ।

१. 'राखल' ।

हे हंसी ! पुनु हमर निवेदन सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

(प्रभावतीक धिरहिनी)

(भइ हय चाउलि मा)

बेलाखल ॥ खजे ॥

सुत दूति मोर कहिनि,

पहु बिनु रह्य न जाय ॥ तेक साजनि ॥

बिरह बहन तनु तावए मोर ।

इ वेदन दुख मोहि नहि थोर ॥

पिया बनु हम निदराएल^१ काल ।

करहु दूति मोर जीव उबार ॥

मय कयल एक तोहेरे आश ।

सबस होएय हम तोहर दास ॥

भनयि प्रकाश नूय मुनहु दूति ।

कय देह तोहे पहु मिलन सुमुति ॥

हे हंसी ! कसोत उपाय चिन्तु, हमर प्राण इहाक अधीन ।

हंसी—हे राजकन्या ! खजे इहाय का एहन मन तजे हमर कहिनि
बाप के कहू जे तौनि हंसो अनेक कीनुक वार्ता अनेक, से
देखु ।

प्रभा—हे हंसी ! अवश्य बाप के कहव ।

प्रभा—हे हंसी ! ए धाम से चलु ।

हंसी—अवश्य ।

(प्रभावती हंसी स्वगत निहाय)

(प्रवम कोरी)

प्रभा—हे हंसी ! हमे बापक स्वगत जायि छव ।

१. पाण्डुलिपि में 'निदराएर' पाठ अछि ।

हंसी—प्रभावती ! भल ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे प्रभावती ! सान सरोवर जायि छत् ।

प्रभा—पुनर्दर्शन चाहि ॥ छु ॥

(वज्रनाभादि बवलन दुहाय)

(प्रथम कोणे)

हे सुनाभ ! सभा गृहे चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—दैत्यराज ! जे आज्ञा ।

सर्वे—प्रभु विप्रय कव ।

वज्र०—अवश्य ।

वज्र०—हे लोके ! खनेक विश्राम कर ।

सर्वे—प्रभु ! सर्वथा ।

(प्रभावती पैसार, दुहाय)

(विरोचिनि मा)

केवारा ॥ चो ॥

चरह हमे जाए ॥ छु ॥

अपुख कहिनि लय जायव तात समाज ।

ई कथा कहव मय आज ॥

(प्रथम कोणे)

हे सखी ! तातक निकट जायव ।

सखी—प्रभावती ! नीक ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—प्रभावती ! चलु ।

प्रभा०—सखी ! चलु ।

प्रभा०—हे तात ! मोर प्रणाम । हे तात ! अर्थ एक वार्ता कहव ।

वज्र०—पुत्रि ! कहु ।

प्रभा०—हे तात ! एक हंसी देखलि ताका देखक अनेक वार्ता जन छहु
से भेट ।

वज्र०—हंसी भेटयि ।

प्रभा०—हे तात ! हमे अपन स्थान जायि छि आशा देखी ।

वज्र०—पुत्रि ! जाउ ।

(प्रभावती बवलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

प्रभा०—हे सखी ! अपन स्थान चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! स्वराय चलु ।

प्रभा०—सखी ! चलु ।

वज्र०—हे मत्त ! हंसी वजान देह ।

मत्त—प्रभ ! जे आज्ञा ।

(छकोणसवादाव सत्ते)

मत्त—हे हंसी ! राजाक निकट जाउ ।

(हंसी बवलन दुहाय)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हमे राजाक निकट जायव ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे मत्त ! कथि लायि राजाक आदेश भेल ।

मत्त—राजाक निकट जानव ।

मत्त—हे दैत्यराज ! हंस हंसी आवल ।

वज्र०—हे मत्त ! बोला आहु ।

मत्त—नाथ ! अवश्य ।

मत्त—हे हंस हंसी ! राजाक आज्ञा भेल भीतर आउ ।

हंसी—मत्त ! जे आज्ञा ।

हंसी—हे महाराज ! हमर प्रणाम । की आज्ञा ?

बज्र०—हे हंसी ! किछु कहब मुनु ।

हंसी—देवराज आज्ञा कर ।

(बज्रनाभोविश वण्डक । मयमनि मा ।)

माधवा ॥ चो ॥

कहह हंसि अपुरुष कहिनि । ध्रु० ॥

अनेक अनेक देश देखल सोहे ।

जे देखि सब जन मोहि ॥ मेभासा ॥

हे हंसी ! इहाय अनेक देश देखलछ । कसोसो अपूर्व कथ कह ।

हंसी—राजा ! मुनु ।

त्रिभुवन नहि एकर समान ॥ ध्रु० ॥

भद्र नाम नट देखल हमे,

गुणे रूपे सबहि उत्तम ॥ मेभासा ॥

हे देवराज ! भद्र समान नट त्रिभुवन नहि छय ।

बज्र०—हे हंसी ! भद्र नाम नट कतय रहैछ, हमरा भेटय पारिय,

इहाहि भेटबिययु ॥

हंसी—अवश्य भेटव्वाह, हमे आनय जायि छव ।

हंसी—हे हंसी ! राजाक आज्ञाय नट बोलाय आनव ।

हंसी—प्रभ ! अवश्य ।

(हंसादि निस्सार)

(बज्रकड़ी तंद कन्हैया मा)

काफी धनाधी ॥ प्र ॥

बल चल जाएव हमे ॥ ध्रु० ॥

बेगे चलव दामोदर निकट,

लए आनव पलदुमन नट ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! इन्द्रक आज्ञाय, द्वारिका जायव ।

हंसी—नाथ ! जे आज्ञा ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—नटर प्रचुम्न वज्रपुर आनवाह ।

हंस—हंसी ! अवश्य ।

(बज्रनाभादि वक्ताय निहाय)

हे लोके ! हम अन्तापुर गय विश्राम करव ।

सर्व—देवराज ! भल ।

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! एतय सो जायव ।

सर्व—देव ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

इहाय लोके अपन कार्य कर ।

सर्व—जे आज्ञा, हमर प्रणाम ।

बन्नावती, गुणवती—हे देवराज ! हमहु प्रभावतीक जग जायव । हमर प्रणाम ।

(सकलैड निहाय)

प्रेमवती—हे प्रभु ! स्वराज विजय कथ ।

बज्र०—प्रिये ! चल ॥ लु२ ॥

(कृष्णादि पैसारण कुंहुय)

(छावव पंडित मा)

मोड़ी कोड़ी ॥ खर्ज ॥

जाओ सबहि भिलि मोर सभा ॥ ध्रु० ॥

धिर जनु करह सबहि लोके सोहे ॥

ह सभा देखि के नहि मोहे ॥
(प्रथम कोणे)

हे लोके सुधर्मा जाड ।
सर्वे—ईश्वर ! जे आशा ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—हे देव ! विजय कर ।
कृष्ण—लोके ! चलु ।
कृष्ण—हे लोके ! खन एक विश्राम करव ।
सर्वे—ईश्वर ! जे आशा ।

(हंस बबलम बुहाय)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसि ! कृष्णक निकट जायव, चलु ।
हंसी—नाथ ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! हन्द्रक कार्य भेल ।
हंस—प्रिये ! सत्य ।
हंस—हे ईश्वर ! हमर प्रणाम । हे जलोक्यनाथ ! हमरा विश्वप्ति
सुनु ॥
कृष्ण—हंस कहू ।

(हंसुक्ति बबलक)

(न कन नर सहो तो, मा)

काकी पनाथी ॥ अर्ज ॥

बासये पठाओल हमे तोहर काम,
सुन सुनु विनति हमर सोहे ॥ ध्रु० ॥

देवक देल दुख अधम दानवराज ।

देवसुत दक्षितक करहु दनन आज ॥ मेभासा ॥

हे ईश्वर ! आन पुत्र पधाए, बज्रनाभ मारि देवकाज कर । ई
इन्द्र विनति कयल ।

कृष्ण—हे हंसी ! हमर कहिनि सुनु ।

हंसी—देव ! आशा कर ।

कृष्ण—अधस देव हमे स्वपुत्र सहाय ।

लहु लहु जाहू जनु हंसि तोहे ॥ ध्रु ॥

नट रूप लय जाहू तोहे सय सतलोक ।

अनेक देवका मुर होए मन शोक ॥ मेभासा ॥

हे हंसी ! हमर पुत्रलोक नट रूपे लय जाहू, तेहि देव कार्य करवाहू
हंसी—देव ! अवश्य ।

कृष्ण—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! इहाय नट रूपे हंसी संगे बज्रपुर जाड,
देवकार्य कर ।

सर्वे—ईश्वर ! जे आशा, हमर प्रणाम ।

हंस—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! धिर जनु कर, शीघ्र विजय कर ।

सर्वे—हंस ! चलु ।

(हंसावि नटरूप, बबलम विहाय)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! बज्रपुर चलु ।

सर्वे—हंसी ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रद्युम्न—हे हंस ! बज्रपुर स्वराम चलु ।

हंसी—प्रद्युम्न ! विजय कर ।

कृष्ण—हे रत्नमणी, सत्यभामा ! इहाय एतय लहु, हमे बज्रपुर जायव ।

रत्नमणी सत्यभामा—ईश्वर ! जे आशा, हमर प्रणाम ।

(कृष्ण सारण दवलत पिहाम)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे सारण ! हमहु संप्राम देखय बज्रपुर जायव ।
सारण—ईश्वर ! उचित ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे ईश्वर ! सत्वर विजय कर ।

कृष्ण—सारण ! चलु ।

शक्तिमणी—हे सत्यभामा, अन्तःपुर भय रहु ।

सत्यभामा—शक्तिमणी ! अवश्य ।

(शक्तिमणी, सत्यभामा परि निहाम) ॥ सु१० ॥

वज्रनाभ प्रेमवती, पैसारण दुहाय)

(नयना नयन कि मा)

काफी ॥ परिमाण ॥

जायव शृंगारपुर, एतय सो नहि दूर ।

करव काम रङ्ग, आज तोहर सङ्ग ॥

(प्रथम कोणे)

हे प्रिये ! शृंगारपुर जायव, चलु ।

प्रेमवती—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रेमवती—हे प्रभु ! स्वयं विजय कर ।

वज्र०—प्रिये ! चलु ।

वज्र०—हे प्रिये ! ए भाम विश्राम कर ।

प्रेमवती—प्रभु अवश्य ।

वज्र०—हे प्राणप्रिये ! हमर बोल किछ सुनु ।

प्रेमवती—प्राणनाथ ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति शृंगार)

(राज सेवके विप्र, मा)

पहुड़िया मालव ॥ काफी ॥ धौ ॥

जोवन समय रक्ष्य दिन चारि ।

मदन ताप दुर कर बरनारि ॥

अधर विन्व तोर तनु मुकुमारि ।

विनु दोषे कुसुम चापहि मारि ॥

एहि वेदन मोहि बसुवा पारि ।

पति वध जनु अंगिरह अवधारि ॥

जगत प्रकाश नृपति रस साथ ।

जे होअ रसिक सेहे रस पाव ॥

हे प्रिये ! तोहर ई रूप देखि अति मुग्ध भेल ।

(प्रेमवतीवृत्ति शृंगार)

हे प्राणनाथ ! हमे किछ विजल्पि कर छव ।

वज्र०—प्रिये कहु ।

(मालिनि के अङ्गना, मा)

मालव ॥ ए ॥

तोहे प्रभु सुनु किछु विनति ।

बिद्या तेजि हमर न आन गति ॥

ए किन्दर तोहे नाथ हमरे ॥ धृ० ॥

नागर तोर तनु कोमल ।

कि कहव जोवन तोहर ॥

मोए नारि तोहरे सोभाबिन ।

पिरिति करहु अंते जल भिन ॥

१. पाण्डुलिपि में 'कुम' पाठश्रद्धि ।

जगत-प्रकाश नृप एहे भान ।
अपुनव हुहु विहि निरमान ॥

हे नाथ ! हमरा ठाम कुषा कर ।

बन्ध०—प्रिये ! अवश्य ।

बन्ध०—हे प्रिये ! खनेक विधाम कर ।

मैन०—नाथ ! जे आजा ।

(सुनाम, मंत्री, मत्त सास दलवन हुंहाय)

(प्रथम कोणे)

सुनाम—हे मंत्री मत्त ! राजाक दर्शन जाय चलु ।

सर्वे—सुनाम ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

उभो—हे सुनाम ! स्वराय चलु ।

सुनाम—मंत्री मत्त ! चलु ।

सुनाम मंत्री मत्त—हे देवराज ! हमर प्रणाम ।

बन्ध०—हे लोके ! वंसु ।

(हंस, हंसी, नट दलवन हुंहाय)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे भद्रनट ! देवराजक स्थान चलु ।

भद्र०—हंस ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

भद्र०—हे हंस ! स्वराय चलु ।

हंस—भद्र ! अवश्य ।

हंसी—हे नटराज ! देवराजक आजा भेल, भीतर आउ ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

भद्र—देवराज ! अखुँ सिद्धिरखु ।

बन्ध०—हे नटराज ! कवनो उत्तम नृत्य कर ।

नट०—देवराज ! अवश्य । आजा कर, कवनो नृत्य करव ।

बन्ध०—हे नटराज ! रामायण नाचु ।

नट—देवराज ! जे आजा ।

भद्र०—हे पुभनट ! हे चारुनट ! देवराजक आजा भेल, रामायण नाचु ।

उभो—श्री राम उत्पत्ति ऋक्षशृंगक आगमन नाचु ।

भद्र०—उत्तम ।

चतुर्ह काखय जाउ हमे ऋक्षशृंग । पुभनट, विभाण्डक,
चारुनट, लोमपाद राजा, एक मंत्री, चारिजनि वैष्या, जे वास
रहल से होयत ।

उभो—भद्र ! भेल ।

(वरिष्ठोपन विहाय)

(राजा मंत्री परिहुंहाय)

राजा—हे देवराज ! इहाक आजा भेल, रामायण नृत्यक । तेँ रामचन्द्रक
उत्पत्ति निमित्त ऋक्षशृंग आनय लायि, लोमपाद राजा काखि
हमे अयलाहु ।

बन्ध०—हे नटराज ! भेल ।

राजा—हे मंत्री ! देव दुनिअ भेल, प्रजाक पीड़ा भेल, देवज सथे कहैछ
जत्रे ऋक्षशृंग एतय आवयि, तत्रे वृष्टि होय, सुभिक्ष होय,
ऋक्षशृंग आनयक उपाय कर ।

मंत्री—हे महाराज ! एकर उपाय अल्प, चारि वैष्या पठाउ, से प्रसारि
लय आनति ।

राजा—मंत्री ! पठाउ ।

मंत्री—महाराज ! जे आजा ।

मंत्री—हे कामकला, कामकेलि, रतिकला, रतिकेलि ! एतय आउ ।

(मिसा तिमहुं ॥ मिसा ॥)

महाराज ! हमरा नमस्कार, की आशा ।

राजा—हे कामकला ४ ! तपीवन गय विभाण्डक पुत्र, ऋक्षशृंग, प्रतारि
घानु ।

मिसा—महाराज ! जे आजा ।

काम०—हे कामकला, रतिकला, रतिकेल ! राजाक आज्ञाय हमरा
सबहि, ऋक्षशृंग, शृंगार भावे मोहि कय आनय ।

तृतीय—कामकला ! भल कहै छि चलु ।

(परि पिहय)

राजा—हे मंत्री ! जाय धरि ऋक्षशृंग आबत ताय हमरा अन्तपुर भय
रहु ।

मंत्री—महाराज ! अवश्य ।

(परि पिहय)

(विभाण्डक, ऋक्षशृंग परिपुहय)

विभाण्डक—हे पुत्र ऋक्षशृंग ! तोहे एतय तपस्या कर, हुमे वन गय
समिध आनय जाइ छि ।

ऋक्षशृंग—तात ! जे आजा ।

(विभाण्डक परि पिहय)

(ऋक्षशृंग तपस्या)

(मिसा परि दुहाय)

काम०—हे सखी लोके ! भाग्य भेल, ऋक्षशृंग देखलाह मुनु ।

तृतीय—कामकला ! कहु ।

(कदम्ब तल भा)

(आशावरी ॥ बी ॥)

वड मुनिराज कयल तप आस ।

एहि सत्रे संभावना करए मोर तरास ॥

१. 'कदम्ब' पाठ हेवाक चाही ।

तोर आशा मोर ॥ धू० ॥

अवस करए चाहे अपन नृपकाज ।

सबहु लोके तोहे कर नयन वान आज ॥

इ सब करिते ऋक्षि आनन्द भेल ।

एहि उपाय हमर बस कइए देल ॥

जगत प्रकाश मेदिनी पति राव ।

एहे मुनि किछ नहि जान रस भाव ॥

(ऋक्षशृंग मिलाकाने)

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! हमर नमस्कार, भीतर आउ, आसन लियो
बसू ।

मिसा—भय ।

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! हमर बड़ साम्य, इहा लोके एतय अयलाह
कयनो कारणे से कहु ।

मिसा—ऋक्षशृंग ! मुनु ।

सारङ्गी ॥ बी ॥

हम सब भागे तोहे दरसन देल ।

तोर तनु परसैते, पाप दुर गेल ॥

मुनिक कोमल देह सिरिसक फूल ।

ससन मुनिराज तोहे आसपूर ॥

हमर आसम पर करि हरि सेवा ।

फल मुले अनेके पुजव एह देवा ॥

हे मुनि ! हमरा आश्रम चलु, ओतहि अनेक फल मुले हरिपूजा
करव ।

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! अवश्य जायव, हमर वचन मुनु ।

१. आश्रम ।

मिता—ऋक्षभृंग ! कहू ।

ऋक्षभृंग—जाए देखव ओहे आसन तोर ।

तुय देह परसन शित भेल मोर ॥

तोहे लोक जे कह्य से हमे करव ।

किए हिम राखल शिरिफल यभिनव ॥

ऋक्षभृंग—हे लोके ! हम इहाक चोल करव । हमर संदेह निवृत्ति

कर, हमर बाप तपस्वी, इहाय लोके तपस्वी, हमर पिता का

बड़ छोड़, इहाय लोक का किछु छोड़ नहि । हमरा बाप का

छाति श्रीफल नहि, इहाय लोक का, दुयि-दुयि श्रीफल, ए

विशेष कहै न भेल ।

मिता—हे ऋक्षभृंग ! हमरो पूर्ण तपस्या भेल, तकर फल ई कलैछि,

इहाक पिता का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

ऋक्षभृंग—हे लोके ! हमर आश्रम, बाप का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

मिता—हे ऋक्षभृंग ! हमर आश्रम चलु, हमहि सन पूर्ण फल तपस्वी

अनेक देखव ।

ऋक्षभृंग—हे मुनि लोके ! खनेक विश्राम कलु, समय भेल, हमर बाप

आगतप्राय ।

मिता—मुनिपुत्र ! अवश्य । तावत् तपोवन देखै छि ।

काम०—हे लोके विभाण्डक मुनि आगतप्राय, हमरा एतय सजे जाउ ।

तृतीय—कामकला ! भल ।

(मिता परि विहाय)

(विभाण्डक परि दुहाय)

विभा०—हे पुत्र ! आव किछ, तोहरा मन आन चिन्ता देखै छि,

संभाषना किछु नहि करै छिहू किय ।

ऋक्षभृंग—हे मिता ! पूर्ण भेल तपस्वी अनेक आयल छल, ताहि मन

लागल ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! कसोन तपस्वी ?

ऋक्षभृंग—हे तात ! छोड़ नहि छाति दुयि-दुयि श्रीफल, अपूर्व नयन

तरंग, स्वर मधुर ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! विश्वास जनु करिय, ओ सब मायावी राक्षस ।

ऋक्षभृंग—तात ! जे आजा ।

(विभाण्डक विधाम वाप)

विभा०—हे पुत्र ! तोहे तपस्या कर, हमे मध्याह्न स्नान करय तीर्थ

जायि छव ।

ऋक्षभृंग—पिता ! जे आजा ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(मिता परि दुहाय)

काम०—हे लोके ! फल बोलि पक्वान्न, तीर्थ जल बोलि मधु, दियो ।

तृतीय—कामकला ! अवश्य ।

मिता—हे मुनिपुत्र ! हमर आश्रमक फल भूल खाउ, तीर्थ जल पीउ,

ई लिउ ।

ऋक्षभृंग—हे तपस्वि लोके ! ई अपूर्व फल, अपूर्व जल, कतय

होयछ ?

मिता—हे मुनिपुत्र ! हमरा आश्रम एहने नदी बहैछ, माछ सबे एहय

फलछ, बिलम्ब जनु कर, चलु ।

ऋक्षभृंग—लोके ! भल ।

(ओवनिता, मा)

तंड़ी, काकी । प्र ॥

काहे धिर किया काहे धिर किया,

धिर किया नाहे, चलो बलो आसन मेरा,

उह धान कए धरि ध्यान ।

उह धान करि विधे ध्यान ॥ धृ० ॥

१. पाण्डुलिपि मे 'धोन' अछि ।

उह देखि के खसि होए हरा ।
ए तुमरा भरे मेरे पन्न सारा ॥

(सकलद विहाय)

(विभाण्डक परि दुहाय)

(ऋक्षशृंग सोय)

विभाण्डक—हे ऋक्षशृंग ! लीन कतय गेल, हा पुत्र २॥
(भुझी, बाडाव ध्यान वृष्टि न सोय)

हमे जानल, रामावतार होनिहार भेल, विधाताय ई घटना कयल,
भल, भात्री अवश्य होयत ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(राजा, मंत्री परि दुहाय)

राजा—हे मंत्री ! ऋक्षशृंग कहेने नहि आयलैय ?

मंत्री—महाराज ! ऋक्षशृंग आयल प्राय ।

(मिता सकलद परि दुहाय)

कामकला—हे महाराज ! इहाक आजाय ऋक्षशृंग अनलाह ।

राजा—हे ऋक्षशृंग ! हमर नमस्कार, विजय कर, हमे अनल लाह
देश रक्षा निमित्त, हमरा देश रक्षा भेल, इहाय किछु दिन
विश्राम कर, इहाके शान्ता नाम कम्पा देवि ।

नर—हे देवराज ! ऋक्षशृंगक आगमन घरि नृत्य कयल, साथे की
आज्ञा ?

कज—हे नटराज ! धन्य धन्य तोह लोक, तोह समान नट त्रिभुवन
नहि छय ।

हंसी—सत्य कहल, ई प्रसाद लीउ, आज हंसी संगे वास जाउ,
समवांतर नृत्य देखव ।

नट—देवराज ! जे आज्ञा ।

(नट हंसी वास बने इवलन विहाय)
(प्रथम कोणे)

नट—हे हंसि ! वास चलु ।

हंसी—नट ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नट ! त्वराय चलु ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

कज—हे प्रेमवती, मंत्री मत्त ! तोहे लोके एतय रहहु, हमे तातक
दर्शन जायव ।

प्रेम—प्रभु ! विजय कर, हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभ, सुनाभ इवलन विहाय)
(प्रथम कोणे)

कज—हे सुनाभ ! तातक आश्रम चलु ।

सुनाभ—देव्यन्द्र ! चलु ।

(तृतीय कोणे)

सुनाभ—हे देवराज ! त्वराय चलु ।

कज—सुनाभ ! अवश्य ।

प्रेम—हे मंत्री मत्त ! अन्तपुर भय रहु ।

सर्व—देवराज ! अवश्य ।

(प्रेमवती, मंत्री मत्त परि विहाय ॥ ३९ ॥)

(प्रभावती पेशारन दुहाय)

(तिरि बिहु, मा ॥)

नट ॥ खज ॥

हम जायव वित्र सदन ॥ ३९ ॥
एतय सो गृह किछु नहि दुरे ।
घिरे घिरे जायव अपनुक पूरे ॥

(प्रथम कोणे)

प्रभा—हे सखी ! अपने गृह चलु ।

सखी—प्रभावती ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! त्वराय विजय कर ।

प्रभा०—सखी ! चलु ।

प्रभा०—हे सखी ! कुछ काल एहि शाये रहव ।

सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(हंसी, प्रद्युम्न वयलन दुःहास)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! इहाय^१ एतय रहु, तोहे जे मुक्ति आवय पारिय, ते

भालि आवह, हमे प्रभावती लग जासि छत् ।

प्रद्युम्न—अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—स्वराय हमे जायव ।

हंसी—हे प्रभावती ! प्रद्युम्न आयलाह ।

प्रभावती—हमर भाग्य ।

(मालिनी स्वान जोडाव पैसारण दुःहास)

(भिय ना आई मा)

आसावली ॥ चौ ॥

मालती माधवी दमन वकूल,

ई सब लय जायव दानव पूर ।

देखव हमे एहे पुरक शोभा ॥ छ० ॥

कुल राखव हमे प्रभावती पास ।

पूर होयव मोर मन का आस ॥

१. पाण्डुलिपि मे 'हृषाय' पाठ छैक ।

(प्रथम कोणे)

हमे मालिनी ई पुष्पमाला लग प्रभावतीक लग जायव ।

प्रद्युम्न—हमे एहि पुष्प उपल समरक रूप करि अन्तःपुर जायव ।

(द्वितीय कोणे)

मालिनि—हमे प्रभावती देखवि ।

मालिनि—हे राजकुमारि ! हमर प्रणाम, इ फूलक माला लियो ।

प्रभा—हे मालिनि ! बड़ उत्तम पुष्प आनल, एतय लहु ।

मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।

मालिनि—हे प्रभावती ! हमरा विद्या दिउ ।

प्रभा—मालिनि ! जाउ, ई वस्त्र लिउ ।

मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।

(मालिनि वयलन विहास)

(प्रथम कोणे)

हमे अपने गृह जायव ।

प्रभा०—हे शुचिमुखी ! एतय आउ, हमर स्थान ।

शुचि०—प्रभावती ! कहू ।

(प्रभावशुक्ति विरहिनी ॥ राधा, मा ॥)

भय्यारि ॥ चौ ॥

कि भेल प्राण मोरे, धियरज नहि हमरे ॥ छ० ॥

देखल दिनान्त उगल दुजराज ।

के विधि सहव हमे आज ॥

एक भमर गाव उत्तम सरे ।

से घाव करण उपरे ॥

ए दुहु मिलि प्राण मोर हरि खेल ।

जीवन संकट भेल ॥

सुनह हंसि हमर किछु विनती ।
के होयत मोर गती ॥
एह रस माख्य प्रकाश भूपती ।
देवि चरण मोर मती ॥

प्रभा०—हे शुचिमुखी ! प्राण संकट भेल ।

शुचि०—भेल होयत ।

(प्रद्युम्न प्रवेश)

शुचि—हे प्रभावती ! जन्हिका लायि तोहर बिरह वेदना से प्रद्युम्न एहे ।

(प्रभावती लज्जा होय)

शुचि०—हे प्रभावती ! ई स्वयं वरमाला प्रद्युम्न के दियो ।

प्रभा—हंसी ! जे आशा ।

(स्वान मालन कीपाय के)

हंसी—हे प्रभावती, हे प्रद्युम्न ! इहा दुहु व्यक्ति का उचित संगम भेल, हमे अपन स्थान जायि छज, अनुज्ञा दियो ।

प्रभावति, प्रद्युम्न—हे हंसी ! इहाक यत्ने हमरा पूर्ण कामना भेलाहु, स्नेह लाखु, विजय कर ।

हंसी—हे नाथ ! ई वार्ता इन्द्र के कहव, जलु ।

हंस—प्रिये ! अवश्य ।

(हंस, हंसी निस्सार)

(विनोद भमरा, भा ॥)

सारङ्गी ॥ प्र ।

पुरण कयल हम इन्द्रक काज ।

जायव मय आज ॥ छु० ॥

वियाहरि प्रभावती, सुन्दरिक भेल गति ।
दिने दिने दुहुका एकमति ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे प्रिये ! इन्द्र के ई सब वार्ता कहव ।

हंसी—नाथ ! उचित ।

सखी—हे प्रभावती ! हमे माताक लग जायव ।

प्रभा०—हे सखी ! ई वार्ता ककरो थाम जनु कह ।

सखी—रानी ! भल ।

(सखी दबलन पिद्वाय)

(प्रथम कोणे)

ई वार्ता रानी के कहव ।

(द्वितीय कोणे)

स्वराय जायव ।

(प्रद्युम्नोक्ति भूषार)

प्रद्यु०—हे प्रिये प्रभावती ! हमर वचन सुनु ।

प्रभा—प्राणनाथ ! आजा कर ।

(हमर वचन किछु, भा ॥)

आशावरी, सारङ्गी ॥ चौ ॥

बदन पंकज नय नयन खंजन ।

सोह रामा हरि लेल मोरा मन ॥

जुगल पयोधर स्वयंभू महेश ।

दरशन निमित्त आएल ई देश ॥

दसन तोहर भेल उत्तम मोति ।

कि कहव हमे एकर जोति ॥

रति रस भाव तोहे सुजान ।

तोहे सनि सुन्दरि न देख आन ।

अगत प्रकाश नृपति एहे बानि ।
गुणवति नागरि अति सयानि ॥

प्रद्यु०—हे प्रभावति ! हमर रतिरस पूर्ण कह ।

प्रभा०—हे प्राणेश्वर ! इहाक अति अद्भुत रूप लावय^१, किछु हमे कहे
छव, अवधान कर ।

प्रद्यु०—प्रिये ! कह ।

(प्रभावगुणित शृंगार)

कहनिया, मा ॥)

धनाधी ॥ चो ॥

ए पिया तोहे सुन्दर रे ॥ ध्रु० ॥

अलप धिनति मोर मुनह हे, अरे पहु,

आज मोर दुख दुर गेला ॥

चदन कमल तोर देखर हे, अरे पहु,

री रूप तोहे दरशन देला ॥

तोहर सरूप मय जानर हे, अरे पहु,

हुहु समुचित संग भेला ॥

हे प्रभु ! हमे बड़ पुण्य इहा पवला है ।

प्रद्यु०—हे प्राणप्रिये ! खनेक विश्राम कह ।

प्रभा—प्राणनाथ ! अवश्य ।

प्रद्यु०—हे प्रिये ! वासस्थान जायव ।

प्रभा—हे प्रभु ! हमर नमस्कार, पुनु दर्शन चाहय ।

(प्रद्युम्न परि पिहाय)

प्रभा—हमे एहि याम खन एक विश्राम करव ।

१. वाण्डुतिविमे 'रावण' पाठ छैक ।

(चन्द्रावती गुणवती पैसारण दुहाय)

(एमन तुमार मा ॥)

बराड़ी ॥ ए ॥

जायव हुहु प्रभावतिक थाम ॥ ध्रु० ॥

अवला जन हमे अवला तोहे,

अवला पति धिनु कैउ नहि सोहे ॥

(प्रथम कोणे)

चंद्रा०—हे गुणवति ! प्रभावती थाम जायव ।

गुण०—चन्द्रावती ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

गुणवती—हे चन्द्रावती ! स्वराय चलु ।

चन्द्रावती—गुणवती ! चलु ।

उभे—हे बहिनि ! हमर प्रणाम ।

प्रभा०—अभिमत स्वामी पावह ।

प्रभा०—हे बहिनि ! हुहु एतय याउ ।

उभे—बहिनि ! अवश्य ।

इति द्वितीयकाण्ड ।

अथ तृतीय दिवसे ॥

(प्रभावती, गुणवती अलंकारण दुःखम्)

प्रभा०—हे वह्नि ! खनेक विश्राम कर ।

उभे—वह्नि ! अवश्य ।

(प्रभावती शीघ्र)

चन्द्रावती—हे गुणवती ! प्रभावती केटा विपरीत भेल, कवनो पुरुष प्रवेश भेल ।

गुण०—चन्द्रावती ! भल कहै छि, चछु, हमराहु चित्तो कलब ।

चन्द्रा०—अवश्य ।

उभे—हे प्रभावती ! हमर गोचर सुनु ।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कह ।

(इत्थो धारि प्राण, मा ॥)

धुरिपा मल्लाल ॥ १ ॥

हमे अभिमिनि नारी, तोहे भाग्यमान ॥ छु० ॥

तोहर चरित्र हमे देखर आन रे,

आलस तनु तोर सोभावे मय जान ॥

ई कलश भरण कएल करेने,

अधरजे कएल पान ॥

हे वह्नि ! पुनु हमरा गोचर सुनु ।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कह ।

(अरे हो ऐसे, माभ मना, मा ॥)

तोड़ि ॥ करज ॥

सुनु तोहे दुहुक चानि

धिरहु दाढ़ल मन मोर ॥ छु० ॥

तोहरा भेल पति, देखल उत्तम रिति
मोर नहि भेल गति, करहु तोहे निति ।

उभे—हे वह्नि ! हमर दुहुक गति चितु ।

प्रभा०—भल होयत भुनु ।

उभे—प्रभावति ! कह ।

सुनु साजनि मोरवाती, काज कए देव हमे तोहरे ॥

करब नए भुगुति जनु संकह मति,

कर तोहे भुगुति अवस होयत गति ॥

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! चिता जनु करिय, इहाहुक स्वामी कए देव ।

उभे—प्रभावती ! अवश्य ।

प्रभा०—हे वह्नि, तोहरा दुहु व्यक्ति के एहन विशा देखि दव जे तोहर कामना पूर्ण होयत ।

उभे—इहाक प्रसाद चाहिय ।

प्रभा०—हे वह्नि ! सुनु ।

उभे—प्रभावती ! कह ।

(प्रभावतुपित नीत)

(नयन तरप दार मा ॥)

मल्लाल ॥ २ ॥

दुहुक जीवन भार, हो नारि, विशा देख मोए तोहरा के ॥ छु० ॥

करहु तोहे विद्याक ध्यान, पूर होय तोहरे काज ।

करु वेश विन्यास आज ॥

प्रभा०—हे वह्नि ! विशा लेहु ।

उभे—इहाक कृपाय पावल, अवे हम पूर्ण कामना भेलाहु ।

(प्रद्युम्न परि वलन दुःखम्)

हे प्रिये प्रभावती !

प्रभा०—हे प्रभु ! हमर नमस्कार । हे प्रभु ! इ दुहु जनि हमर बहिनि
इहाके प्रणाम करेछ ।

प्रद्युम्न—प्रभावती ! उचित ।

प्रभा—हे बहिनी ! हमरा नाथ के प्रणाम कर ।

उभे—प्रभावती ! अवश्य ।

उभे—हे ठाकुर ! हमर प्रणाम ।

प्रद्युम्न—पूर्ण काम होव ।

प्रभा०—हे नाथ ! हमरा आधि कृपा कयल, ई दुहि व्यक्ति के पति
होमत से विचार कर ।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावती का गद-स्वामी, गुणवती का शाम्भ
स्वामी ।

प्रभा०—नाथ ! उचित ।

प्रद्युम्न—हे गद, शाम्भ ! एतय आउ ।

(गद शाम्भ पैसारण दुहाय)

(नाथि ए निको संगे, भा ॥)

रामकरी ॥ प्र ॥

कि कहल परद्युम्न जायव दुहु मिलि ॥ ध्रु० ॥

विर न करि केने चलह आज ।

कएल आमन्त्रण की भेलहु काज ॥

(प्रथम कोणे)

गद—हे शाम्भ ! कयि लायि प्रद्युम्न बजब्लाह ।

शाम्भ—जानि नहि होयि अछ ।

(द्वितीय कोणे)

शाम्भ—हे गद ! केने चलु ।

गद—शाम्भ ! चलु ।

गद—हे प्रद्युम्न !

प्रद्युम्न—हे गद ! हमर नमस्कार ।

गद—कल्याण होव ।

शाम्भ—हे प्रद्युम्न ! हमर नमस्कार ।

प्रद्युम्न—शुभ होय ।

प्रभा—हे प्रद्युम्न ! को निमित्त आशा कयल ।

प्रद्युम्न—हे गद ! इहाय चन्द्रावती विवाह कर ।

हे शाम्भ ! इहाय गुणवती विवाह कर । ई निमित्त आह्वान कयल ।

उभे—अवश्य करव ।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावती गद के, गुणवती शाम्भ के देउ ।

प्रभा०—प्रद्युम्न ! अवश्य ।

प्रभा०—हे चन्द्रावती गुणवती ! दुहु जनि दुहु व्यक्ति के पुष्प माल दियो

उभे—प्रभावती ! भल ।

(उभे, स्वाम-नाथन कोषाय के)

प्रद्यु०—हे गद ! सोहरा दुहु जनि, एतय रह, हमे पुष्पवाटिका जायव ।

गद—प्रद्युम्न ! जाउ ।

प्रद्यु०—हे शाम्भ ! पुष्पवाटिका जायव ।

शाम्भ—प्रद्युम्न ! अवश्य ।

(प्रद्युम्न, शाम्भ, प्रभावती, गुणवती सबलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

प्रद्युम्न—हे शाम्भ, प्रभावती, गुणवती पुष्पवाटिका चलु ।

गद—प्रद्युम्न ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

शाम्भ—हे प्रद्युम्न ! इहा लोके पुष्पवाटिका जाउ, हम अपना यान
जायव ।

(शाम्भ, पुण्यवती दयलन विहंगम)

प्रभा०—हे प्रभु, तोलित विजय कर ।

प्रश०—प्रिये ! चलु ।

(नदीवति भृंगार)

हे प्रिये ! इहाक रप जीवन किछु कहै छी सुनु ।

चन्द्रा०—नाथ ! कहु ।

(ए सखि, मा)

विभास ॥ एतात् ॥

मृगनयनि तोहे अति तहनि ॥

तोहे देखि मुगुवए महामुनि ॥

कुच जुग तोहर हेम कलेश ॥

समु परसने दुर होय कलेश ॥

जनु मारह रामा कुसुमवान ॥

सुनने देह आलिंगन दान ॥

जगत प्रकाश धरखिपति भान ॥

ई नारिक आन नहि समान ॥

की कहव रे, टेक ॥

गव—चन्द्रावति ! हमर मन, सानन्द कर ।

(चन्द्रावत्युक्ति भृंगार)

चन्द्रा०—हे नाथ ! मोरा निवेदन सुनु ।

गव—प्रिये ! कहु ।

(केशरीक, मा)

आसावरी काकी ॥ प्र ॥

पहु विनु अचला केउ नहि सोभ ।

तोहे देखि कसोन जुवति नहि सोभ ॥

मुगुधा नारि भाव नहि जान ।

त्रिभुवन नहि तोहर उषमान ॥

मधुर वचन सुभ अमिय समुद ।

तोहर मुख कि कहव अति अद्भुद ॥

प्रकाश नृपति भन रक्षुपति कूष ।

जहुकुल गद रतिरस परिपूर ॥

हे प्रभु ! हम इहाक अधीन ।

गव—हे प्रिये ! खन एक विश्राम कर ।

चन्द्रा०—नाथ ! अवश्य ।

गव—हे चन्द्रावती ! प्रसन्न निकट चलु !

चन्द्रा०—नाथ ! विजय कर ।

(गव, चन्द्रावती दयलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

गव—हे प्रिये ! त्वराम ओतय चलु ।

चन्द्रा०—नाथ चलु ।

(द्वितीय कोणे)

चन्द्रा०—हे प्रिये ! शीघ्र विजय कर ।

गव—प्रिये ! चलु ॥ लु १२ ॥

(कश्यप, शिष्य प्रवेश)

(साजन आय मा)

काकी, भगधी ॥ चो ॥

आमरा कश्यप मुनिराज,

रङ्गभूमि देखह शिष्य तोहे धाज ॥

मोए उत्तम मुनि ॥ ध्रु० ॥

कश्यप—हे सुबोध, हे प्रबोध ! हमर वचन सुनु ।

उभो—गुह ! आज्ञा कर ।



(श्लोक)

सरसिजापनशासनमादृतः समधिगम्य जगत् क्रमतोऽसृजम् ।
सनकबन्धसदः प्रविशाम्यहं मुनिवरः प्रमत्ता इह कश्यपः ॥
हे सुबोध, प्रबोध ! एतादृश कश्यप हूमे ।

उभौ—मुनिराज ! सत्य ।

गुबोध—हे गुरो ! हमर सोचर किछु चुनु ।

कश्यप—सुबोध ! कहु ।

(श्लोक)

अहं सुबोधः प्रतिपन्नबोधः शोकण्यपादिष्टतया महर्षेः ।
विशामि रंगं वक्षितातिरंगं, पानीयजन्मेव सहस्ररश्मेः ॥
हे गुरो ! एहन सुबोध हूमे ।

कश्यप—भल ।

प्रबोध—हे मुनीश्वर, हम किछ कहै छव ।

कश्यप—प्रबोध ! कहु ।

(श्लोक)

गुरोः पदहस्तकृतप्रबोधः प्रबोधनाम मुनिबुद्धयः ।
विशामि हृषीकेशभक्तिमुक्तो नटस्थालयमस्तबोधः ॥
हे गुरो ? एतादृश प्रबोध हूमे ।

कश्यप—सत्य ।

कश्यप—हे सुबोध, प्रबोध ! विश्राम कर ।

उभौ—हे गुरो ! श्रवण्य ।

(वचनाम, मुनाम वंसारण हुंहाप)

(चल चल मुवबनि, सा)

पहड़िया ॥ परिमान ॥

चल चल मुनाम तातक पासे ।

पिताक चरणा देखि पापक तासे ॥

१. पाशुलिपि मे 'भर' पाठ छैक ।

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे मुनाभ ! मुनिक आश्रम चलु ।

मुनाभ—वज्रनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

मुना०—हे वैद्यराज ! त्वराय चलु ।

वज्र०—मुनाभ ! चलु ।

वज्रनाभ, मुनाभ—हे तात ! हमर प्रणाम ।

कश्यप—आयुष्मान् भव । हे वरस ! एतय वंसु ।

उभौ—तात ! श्रवण्य ।

कश्यप—हे वरस ! कसोन कार्य एतय आयलाह ?

वज्र०—हे तात ! इहाक प्रसादे सकल पूर्ण भेल, इहाक आज्ञा होय ती
राजसूय यज्ञ करिय ।कश्यप—हे पुत्र ! अनु करह, संपन्न नहि होयत, इन्द्रवज्र सोहरा बेरी,
त्वराय घर जाई ।

वज्र०—तात ! जे आज्ञा ! हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभ, मुनाभ बदलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे मुनाभ ! मुनिक आशा भेल, घर जायव ।

मुनाभ—प्रभु ! श्रवण्य ।

(द्वितीय कोणे)

मुनाभ—वैद्यराज ! घर चलु ।

वज्र०—मुनाभ ! चलु ।

(आह्वान, आह्वानी वंसारण हुंहाप)

सल्लाल ॥ वो ॥

मुनी रचना बधारिनिया ॥ छु ॥
तबे बिन न सोहामो मय तेरे पुण गाव,

तेरे रूप देखि के लागा मन मेरा ॥
करो हम सो भाव तेरे सुम्बन वास ॥
बहु समय वीरे सुनो तो न कर तेरा ॥
(प्रथम कोणे)

ब्राह्मणी—हे नाथ ! पुत्र मागव ।
ब्राह्मण—कश्यप सेवा कय पुत्र मागव ।
ब्राह्मण, ब्राह्मणी—हे कश्यप ! हमर नमस्कार ।
कश्यप—अभीष्ट लाभ होव ।
कश्यप—हे ब्राह्मण ! कयोन कामनाय हमर धाम आयलाहु ?
ब्राह्मण—हे ऋषीश्वर ! हमरा वाङ्मक भेल । एतहु दिन पुत्र नहि भेल,
से मागय आयलाहु ।
कश्यप—अवश्य बहा का पुत्र होयत, हमर दर्शन सफल होयत, अदने घर
जाउ ।
ब्राह्मण—हमर नमस्कार ।
(प्रथम कोणे)

ब्राह्मण—हे प्रिये ! घर जायव ।
ब्राह्मणी—नाथ ! अवश्य ।
(द्वितीय कोणे)
ब्राह्मणी—हे नाथ ! सानन्द भेलाहु, मुनिराज बल देल ।
ब्राह्मण—हे प्रिये ! हमरा भाग्य ।
(कश्यप शिष्य निस्कार)
(अल वफ खोर, मा)
काकी ॥ वी ॥

हमे करव ईशक ध्यान,

१. वी ॥
२. फल ।
३. वर ।

ई छाड़ि सोन न जान ॥ धु ॥
चलहु शिष्य जाव तपोवन ।
शिष्यक जरण एक मोर धन ॥
(प्रथम कोणे)

हे मुबोध प्रबोध ! तपस्या करव ।
उभो—गुरु ! अवश्य ।
(द्वितीय कोणे)

उभो—हे गुरु ! तपोवन विजय कर ।
कश्यप—मुबोध, प्रबोध ! चतु ॥ लु १३ ॥
(शाम्भ, गुणवती बचलन हुं हान)
(प्रथम कोणे)

शाम्भ—हे प्रिये ! शृङ्गार मण्डप चतु ।
गुण—नाथ ! चतु ।
(द्वितीय कोणे)

गुण—हे प्रभु ! शृङ्गार मण्डप देखय हमरहु बड़ उत्कंठा ।
शाम्भ—प्रिये ! चतु ।
शाम्भ—हे प्रिये ! ई रमणीय स्थान, विश्राम कर ।
गुण—नाथ ! अवश्य ।
शाम्भ—हे मृगनयनि मुग्धे ! हमर बिनति सुनु ।
गुण—नाथ ! आज्ञा कर ।

(शाम्भोक्ति शृङ्गार)
(स्वाङ्गा, मा)

भोपाति ॥ धो ॥
गुणवति तोहे सब गुण परिपूर ।
मोहि हृदय सने जनु कर दूर ॥

१. वर ।

कोमल कर तुझ किसलय भास ।
चाह जीवन तोर मदन खिलास ॥
बरदान देह तोहे सरदक बन्द ।
देखि बदन होय मन सानन्द ॥
न कर न कर घनि प्राणक नास ।
विनति एहे मोर तोहरे पास ॥
जगत प्रकाश नृप कह ओहे वाला ।
शाम्ब कएलक हृदयक हारा ॥

शाम्ब—हे गुणवती ! तोहर गुण की कहव ।

गुण०—हे प्राणनाथ ! हमर हृदय वेदन सुनु ।

शाम्ब—प्रिये ! कह ।

(गुणवत्युक्ति शृङ्गार)

(चुचरी देह, मा)

कोराव ॥ प्र ॥

तोहर वचन सुनि जीव मोर कपयी ।
दुरदक भार नलनि नहि सहयी ॥
हमे अति वालि तोहे बर तरुना ।
पहु मोहि देखि नहि किए कर कशना ॥
हठ जनु करह सुन्दर नागर ।
तुझ कर परसे होय हिय कातर ॥
जगत प्रकाश नृपति एही गावए ।
जे बुच जन होए सेहे रे पावए ॥

हे नाथ ! अवसर सब रमणीय ।

शाम्ब—हे प्रिये ! खन एक विश्राम कर ।

गुण०—नाथ ! अवश्य ।

(प्रद्युम्न, प्रभावति, वंसारण बु'हय)

(मन्द नन्दन, ॥ मा ।)

सारङ्ग ॥ प्र ॥

एहन मारी तोह हमरा पालि ॥ प्र ० ॥

सुन्दरिक मुख देखि जाएव शान्ध पास ।

हमे कएल रमनि तोहे रति आस ॥

(प्रथम कोणे)

प्रद्यु०—हे प्रिये ! शाम्ब देखय जायिया ।

प्रभा०—प्रभु ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रभा०—हे प्रभु ! त्वराय विश्राम कर ।

प्रद्यु०—प्रिये ! चलु ।

शाम्ब, गुणवती—हे प्रद्युम्न ! हमर प्रणाम । एतय विश्राम कर ।

प्रद्युम्न—शाम्ब ! अवश्य !

(गद चन्द्रावती वचन बु'हय)

(प्रथम कोणे)

गद—हे चन्द्रावति ! प्रद्युम्न देखय जायव चलु ।

चन्द्रा०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

चन्द्रा०—हे प्रभु ! प्रभावती पास जायव ।

गद—प्रिये ! चलु ।

गद—हे प्रद्युम्न !

प्रद्युम्न प्रभावती, शाम्ब, गुणवती—हे गद ! हमर प्रणाम ।

गद—शत्रु नाश होव ।

प्रद्यु०—हे लोके ! अन्तःपुर भय रह ।

सर्व—अवश्य ।

(प्रद्युम्नादि परि विहाय)
(वंशरानी, मन्त्री परि दुःहाय)

हे मन्त्री ! दैत्यराज की नहि आयल छधि ?
मन्त्री—हे महारानी ! दैत्यराज आवता ।

(सखी बचलन दुःहाय)
(प्रथम कोणे)

रानीक लग हमे जायव ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—द्वराय जाएव ।

सखी—हे रानी ! हमर प्रणाम ।

रानी—सखी एतय आउ ।

सखी—रानी, अवश्य ।

सखी—हे रानी ! कन्यापुर कछोनहु पुरुषक प्रवेश भेलछ, से बुझु ।

रानी—सखी ! बुझव ।

(वज्रनाभ, सुनाभ वंशरण दुःहाय)

ज्याडा ॥ मा ॥

मालश्री ॥ चौ ॥

चलु भाय सुनाभ, अपनुक सधने ।

ओ घर देखय के भेल मोर मने ॥

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! नगर अयलाहु ।

सुना०—लोक विमन सन देखे छी ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे वज्रनाभ ! घर त्वराय चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

वज्र०—हे प्रिये ।

रानी—हे नाथ ! हमर नमस्कार, विजय कर ।

वज्र०—प्रिये ! अवश्य ।

वज्र०—रानी ! कुशल ?

रानी०—हे प्रभु ! सब कुशल, एक धार्ता अकुशल ।

वज्र०—ह ! ह ! की अकुशल ?

रानी—कन्याक अन्तःपुर कछोन पुरुष प्रवेश भेल ।

वज्र०—हे सुनाभ, मन्त्री मत्त, बड़ साहसी कैयो थिक, साज कय चलहु, मारव ।

सुनाभ—अवश्य ।

वज्र०—हे प्रेमवती ! तोहरा एतय रहु, हम बेरी मारय जायव ।

प्रेम०—प्रभु ! विजय कर, हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभि साज बचलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! तोराय चलु ।

सुनाभ—वज्रनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे दैत्यराज ! बेरि मारव चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

प्रेमवती—हे सखी ! अन्तःपुर भय रहु ।

सखी—रानी ! अवश्य ॥ तु १५ ॥

(प्रद्युम्नादि परि दुःहाय)

प्रद्यु०—हैं लोके ! वज्रनाभ नगर अयिलाह, युद्ध अवश्य होयत, हमरहु

सुसज्ज सबहि होड ।

सबे—सुसज्ज छी ।

(वज्रनाभ वि बचलन दुःहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! कन्यागृह जायव ।

गुनाभ—देवराज ! भल ।

(द्वितीय कोणे)

गुनाभ—हे देवराज ! बेरि देख ।

बज्र०—अवय देखव ।

(यना हक्के)

रे रे पुरुष ! के धिक ? एतय कि आयल छी ?

प्रभा०—हे प्रभु ! बज्रनाभ ई सब वार्ता जानल, मोरा पास बड़, की होयत सुनु ।

(ममाशपुत्रित भयानक ॥)

(माला हरि बिनु, मा ॥)

बेहाइला ॥ प्र ॥

की होयत जीव मोरे,

ई सब सुन हमर प्राण थल थल काये ॥ भृ० ॥

सुनल हमे अनेक घोर सोर ।

से सुनि अधिक तरास भेल मोर ॥

ई सब सुनि कए आपसहु सात ।

मोर उधार न करए अपन मात ॥

अवस करए इ नाथक नास ।

हमहु करव तब्बो पडु संगे पास ॥

अगत प्रकाश नय ई रस गाव ।

चण्डी सेवा बिनु गति नहि पाव ॥

प्रभा०—हे प्राणनाथ ! की उपाय करव ?

प्रय०—हे प्रिये ! पास जनु करिए, हमे एक क्षणे सबहि भारव, किन्तु संवधि भेल, ते मारविते संकोच होयिछ ।

प्रभा०—हे नाथ ! अपन जीवन रक्षा कर, ई अमोघ अस्त्र हमरा बाप के बह्मा देल, ई लियो, अपन प्राण रक्षा कर ।

प्रय०—भल, जे इहाक अभिमत ।

(यज्जनाभ हक्के ॥ प्रय० मन्, गद, शाम्ब देख ॥)

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! अन्तःपुर भय रह ।

उभे—अवश्य ।

(प्रभावती, गुणवती परि विहाय)

गुनाभ, मन्त्री—रे रे पुरुष ! के तोहरा धिक ?

गव—हमरा जादव, हम कृष्णक भाय बसुदेव पुत्र, ई कृष्णक पुत्र प्रय० मन्, शाम्ब ।

गुनाभ—तोहे गधार, राजाक अन्तःपुर पैसर छह, भावे कतय जाय छह ? भारव हे सुनह ।

गव—गुनाभ ! कह ।

(परम हरिते, मा ॥)

पहड़िया ॥ ए, प्र ॥

तोहे गद शाम्ब अलप बुधि तोह रे ।

पसटि जाह दुहु हमर दरे ॥ मेभासा ॥

हे गद ! तोह सबहि जीव लेप जाह ।

गद, शाम्ब—हे गुनाभ ! गर्व जनु करह, हमर बचन सुनह ।

गुनाभ—गद ! कह ।

(गदोचित)

अरे गुनाभ हम सो कि कर गुमान ।

अबे मारवाह हमे तोहे नहि जान ॥ मोय के ॥

बश, मन्—हे प्रय० मन्, चाड़ होय, अब कतय जाय छह ?

प्रय०—हमे बाधे छह ।

(कारि धरिप, मा ॥)

प, रि, ए, प्र ॥

परदुमन तोहे किचित मानुषे ।

मोर साशा बिनु पुर रहलाह सुखे ॥ मेभासा ॥

हे प्रद्युम्न ! अल्प मानुस तोहें, हम सोट नहि पारय ।
 प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! तोह देव मानव गंधर्व सबक वरी, अवश्य मारवाहे
 हमें, सुनहु ।
 वज्र०—प्रद्युम्न ! कह ।

(प्रद्युम्नोक्ति)

तोह मारए एहि रहलाय पूर ।
 तोहर काय सो प्राण करव मोए दूर ॥ मेभासा ॥
 हे वज्रनाभ ! एहि खन मारिवाहय ।
 वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोहें हम मारवहु, तोहर बाप कृष्ण से नहि हमें
 मारय पार्ता है ।
 प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! हमर बाप कृष्ण से आयलाह, हमें तोह मारवाहे
 (कृष्ण, सारण वचनन दुहाय)
 (प्रथम कोणे)

कृष्ण—सारण ! जुझ देखव ।
 सारण—अवयय देखव ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे प्रभु ! स्वराय चतु ।
 कृष्ण—सारण ! चतु ।
 प्रद्यु०—हे तात ! हमर नमस्कार ।
 कृष्ण—शत्रु जिनु ।
 प्रद्यु०—हे तात ! भल भल, एतय विजय कवल अपने ।
 कृष्ण—हे पुत्र ! ई सारङ्ग धनु लियो, शत्रु मारि देवता सबक सातन
 कह ।
 प्रद्यु०—तात ! इहाक आशिषे सब होयत ।
 वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोह कतय जाय, एखने मारव, मुनु ।
 प्रद्यु०—दानव ! कह ।

वज्रनाभ हमें कि करव, तोहें काज ।
 दानव तोह जमपुरि पडाओव आज ॥ मोय के ॥

(भूत परि दुहाय)

(इषाम वरायणी, मा)

तोहि, वसन्त ॥ चो ॥

मुदिते नाचल भूत डाकिनि परेत पिशाचि ॥ ध्रु० ॥
 करेज घात मामु खाए काचे काचे ।
 इ खाए के आनन्द ते नाचे ॥
 इ सबे पिबए लोहु, डाकिनि लोक ।
 हाय पाव खाए मृष भोक ॥

(वैश्यरानी, सखी परि दुहाय ।)

वैश्यरानी—हे सखी ! कोराहल^१ सुनयि छी ।

सखी—जुझ होमिछि ।

(वैश्यरानी न सोय ॥ शिव, शिव)

(अर्जुन मा)

मरहथि ॥ लांजति ॥

शिव शिव पडु के ई गति भेल ।
 मोरा रतन दैव हरि लेल ॥
 जे हमें मागल सब प्रभु देल ॥
 ऐसने प्राणनाथ आवे दुर गेल ॥
 एहन पति सो भेल वियोग ।
 नासव तनु हमें चिन्तव योग ॥
 जगत प्रकाश नृप एहे गाव ।
 हरि सेवा ते निकं थाम पाव ॥

प्रद्यु०—हे प्राणनाथ ! की अवस्था ?

१. कोलाहल ।

(सूर्या गायन, ननु काम)

प्रद्यु०—हे प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती ! एतय आउ ।
प्रभावती चन्द्रा० गुण०—हमर नमस्कार ।

हे ईश्वर ! हमर प्रणाम ।

कृष्ण—हे गद, सारण ! प्रद्युम्न के ई राज्य अभिवेक कर ।
गद, सारण—एहन उचित ।

(प्रद्युम्न रजशभिवेक ॥ क्वाडा, मा ॥)

भैरवी ॥ ए ॥

मारल असुर देव सबक भेल सुख, सोहे कए उत्तम काजे ।
जायत भानु रह होउ ठाकुर एहे लेउ बैरिक राजे ॥
सबै—जावत धरि चाद सूर्य तावत धरि इहाय राजा, एहि वज्रपुरे ।
सबै—तथास्तु ।

कृष्ण—हे लोके ! देव कार्य भेल, द्वारिका चलु ।

सबै—नाथ ! अवश्य ।

(कृष्णादि निस्सार)

(नो पारान, मा ॥)

तोड़ि ॥ ए ॥

ई हमे जान पुरदुमनका जनम कृतारथ भेला ॥ ध्रु ॥
वज्रनाभ असुर मारि लेल सुन्दरि, इ दानव सब देखि नहि भीति ।
हरख चलह अब द्वारिका पुरि, सुत कएल निक किरति ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! पूर्ण मतोरथ भेल, द्वारिका चलु ।

सबै—नाथ ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

सबै—ईश्वर ! शीघ्र विजय कर ।

कृष्ण—लोके ! चलु ॥ लु १६ ॥

(रुक्मिणी, सत्यभामा परि दुःहाय)

रुक्मिणी—हे सत्यभामा ! ईश्वर प्रद्युम्न ई प्रभुति कहिया आवत ?

सत्य०—हे रुक्मिणी ! मोर सगुण भेल, आयल प्राय ।

(कृष्णादि शवलन दुःहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! द्वारिका जायव चलु ।

सबै—ईश्वर ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

सबै—हे ईश्वर ! द्वारिका आविलाहु ।

कृष्ण—लोके ! उत्सव कर ।

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा !

रुक्मिणी, सत्यभामा—हे प्रभु हमर नमस्कार । एहि आसन विजय कर ।

कृष्ण—प्रिये ! अवश्य ।

मा०, चन्द्रा०, गुण०—हे धकुरायिनि ! हमरा नमस्कार ।

कृष्ण—हे प्रिये ! ई प्रद्युम्नक पत्नी प्रभावती, ई गदक पत्नी चन्द्रावती,

ई शाम्बक पत्नी गुणवती, संभाषणा कर ।

रुक्मिणी—हे प्रभावती, चन्द्रावती ! एतय आउ ।

सबै—माता ! अवश्य ।

कृष्ण—हे लोके ! हम ईश्वर भक्त करव ।

सबै—ईश्वर ! जे आशा ।

(कृष्णोक्ति शान्ति रस ।)

(श्याम बंधु मा ॥)

गौरी वंशम ॥ चो ॥

मन हमरा एहि भेला ॥ ध्रु ॥

हमे सब जानल संसार असार, सार एक शिव नाम ।

सहे शक धिरे गंजाजल धार, एहि सेवि नहि होए बाम ॥

शिव पद सेवण के न कर विचार हम सेवक एहि ठाम ।
प्रकाश नृपति कहै, तोहरे सघार, पूरह मनक काम ॥
कृष्ण-हे हविमणी, सत्यभामा ! ईश्वर भक्त पय सार ।
उभे-ईश्वर ! सत्य ।

कृष्ण-अतः पर देव कार्य कयल, भाव की कर्तव्य ?
प्रद्युम्नावि-सय समीहित सिद्ध भेल, अतः पर ई होय ।

(प्रद्युम्नोक्ति श्लोक)

काले वर्षंतु वासवो वसुमती शस्यादिपूर्णाभवे—
वासतां भूपतिरेष नित्यविजयो सावद्रुहाधीश्वरम् ।

मावतिष्ठति जाल्लवो हरजटाजूटे समुज्जृम्भतां,
सावद्वीरजगत्प्रकाशानृपतेः कीर्तिः कवित्वोज्ज्वला ॥

सय-सर्व सिद्ध होअव ।

प्रद्यु-हे लोके ! ईश्वरोक्त भक्त कह ।

सय-भवय ।

(शिवनाम मा ॥)

पंचम क्षुमरि ॥

कृपा करह जगत जननि माता ।

तोहरे भवानि सय लोक का धाता ॥

खोन सेवक हमे देखि कर करना ।

कि कहव माता मोए तोहय गुना ॥

जगत्प्रकाश नृपति कर विनती ।

जनम जनम होइ तोर पद मती ॥

इति श्रीश्री जयजगत्प्रकाशमल्लकृत प्रभावतीहरणनाम नाट्य-
समाप्तम् ॥

नेपालाब्दे रसायनायदे, मणिले कामनासरे,
प्रायादे बहुले पयै, ग्रन्थः संपूर्णसमाप्त ।

